रमाकान्त शुक्ल कृत 'भाति मे भारतम्' में मुक्तक काव्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन

बिनाता दास [1], डॉ॰ सुमित शर्मा [2]

[1] शोधार्थी, [2] निर्देशक, सहायक प्रोफेसर,
सिंघानिया विश्वविद्यालय, बड़ी पचेरी, झुंझुनू, राजस्थान।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 5, (September-October 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

ऋग्वेद विश्व का सर्वप्रथम मुक्तक संग्रह माना जाता है। प्राचीन वैदिक साहित्य, पालि और प्राकृत साहित्य में वे तथ्य उपलब्ध होते हैं, जो आगे चलकर मुक्तकों और विशेषतः शृंगारी मुक्तकों के विकास में कड़ियां बनते हैं। ऋग्वेद संहिता में उषा, पर्जन्य, सहित आख्यानी आदि के प्रति कौतूहल भरी, श्रद्धा पूरित, भावसिक्त कविवाणी को अनदेखा कर भी दें पर अथर्ववेद संहिता के उन सूक्तों को कैसे भुलाया जा सकता है, जो किसी स्नेह के प्यासे प्रेमी की बात बताते हैं, प्रिया को प्राप्त करने के लिए आतुरता प्रकट करते हैं - काम की बड़ी प्रतिष्ठा थी "कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्"। अथर्ववेद का प्रणयी प्रेमिका का यह चित्र और इसके रंग, प्राकृत तथा संस्कृत मुक्तकों के चटक रंग नहीं हैं, इनकी ऋजुता, सरलता और अकृत्रिमता, वैदिक युग की निश्चल प्रवृति का प्रतिबिम्ब है।

वैदिक युग में राजाओं तथा वीरों की कथाएँ गाथाओं में गायी जाती थी। धम्मपद की गाथाएँ बौद्ध भिक्षुओं का मार्ग आलोकित कर रही थी। थेरगाथा और थेरीगाथा में बहुत से स्थलों पर शुद्ध काव्य के दर्शन होते हैं। प्राकृत के गाथाकारों को निश्चय ही ऐसी गाथाओं से प्रेरणा मिली होगी। मुक्तकों का वास्तविक स्वरूप हाल की गाहासतसई में प्राप्त होता है। ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में अनेक कवि ऐसी रचनाएं करते रहे होंगे, यही कारण है कि इस सतसई में लोक का जैसा चित्र प्राप्त होता है, वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। सामान्यतः जनता का जीवन, आचार, धर्म और काम का वह स्वरूप दिखाई देता है, जिसका प्रत्यक्ष दूसरे माध्यम से होना मुश्किल है इसलिए हाल द्वारा संकलित गाथाओं ने बाद की संस्कृत काव्य की परम्परा पर गहरा प्रभाव डाला और संस्कृत में मुक्तकों की परम्परा आई।

मुक्तकों की इस विकसनशील परम्परा में भर्तृहरि के तीन शतक, नीति शतक, और वैराग्य शतक आते हैं।

हाल और भर्तृहरि की समृद्ध परम्परा में अमरूक के मुक्तक आए। अमरूकाव्य अमरूकशतक मुक्तक के ज्वलंत दृष्टांत हैं। अमरूक ने ऋजु, सरल और मार्मिक शैली में प्रणय की विभिन्न स्थितियों को अंकित किया है।

अमरुक के पश्चात् संदेशकाव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य और मुक्तकों की प्रचुर राशि संस्कृत साहित्य को प्राप्त हुई। अमरुकशतक के आदर्श पर लिखी हुई बिल्हण की चोरपंचाशिका में यद्यपि कथा का एक सूत्र आद्योपान्त पिरोया हुआ है, तथापि प्रत्येक श्लोक अपने में पूर्ण है। समयक्रम के अनुसार चोरपंचाशिका के पश्चात् एक अत्यन्त

महत्त्वपूर्ण रचना "आर्यासप्तशती" आती है। गोवर्धनाचार्य ने हाल के आदर्श पर आर्याओं की रचना की है। संस्कृत मुक्तकों के इतिहास में "आर्यासप्तशती" का विशेष स्थान है। संस्कृत मुक्तकों की प्रचुर राशि सुरक्षित रखने में सुभाषित संग्रहों का योगदान भी अविस्मरणीय है। इनमें संस्कृत मुक्तकों की विविधता और उत्कृष्टता के दर्शन होते हैं। इन सुभाषित संग्रहों में संस्कृत के कितने ही स्मृत और विस्मृत कवियों की रचनाओं का संकलन संस्कृत मुक्तकों की विविधता और श्रेष्ठता को व्यक्त करता है।

संस्कृत मुक्तकों की परम्परा में सतत रूप में कवि और कवयित्रियों का योगदान भी कम नहीं है। ऐसे कवियों की सुदीर्घ परम्परा आज बीसवीं शताब्दी तक अविच्छिन्न है, जिनमें एक अत्यंत प्रमुख और महान् कवि पण्डितराज जगन्नाथ हैं। पण्डितराज ने नूतन मुक्तकों की रचना की। इनका विषय अत्यन्त व्यापक है।

इस प्रकार वैदिक सूक्त, थेरगाथा-थेरीगाथा, गाहासतसई, शतकत्रयी, अमरूकशतक, आर्यासप्तशती, सुभाषित संग्रह और पण्डितराज के मुक्तकों ने संस्कृत मुक्तक काव्य की उत्कृष्ट और सुदीर्घ परम्परा स्थापित की है।

मुक्तक (शतक) काव्य के प्रकार

मुक्तक (शतक) काव्य के सामान्यतः दो भेद किए जा सकते हैंः

1. लौकिक
2. धार्मिक

1. लौकिक मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्यों में लोक से सम्बद्ध नाना विषयों को रचना का विषय बनाया जा रहा है। भर्तृहरि के तीन शतक, अमरूक का अमरूकशतक, चोरपंचाशिका आदि लौकिक मुक्तक काव्य के अन्तर्गत आते हैं।

2. धार्मिक मुक्तक काव्य

धार्मिक मुक्तक विशिष्ट देवता की स्तुति से सम्बद्ध रहता है। इसका प्रचलित नाम 'स्तोत्र' है। सूर्यशतक, चण्डीशतक, शिवस्तुति आदि धार्मिक मुक्तक काव्य की कोटि में आते हैं। यदि संस्कृत के मुक्तक काव्यों का सूक्ष्म निरीक्षण करके विभाग किया जाए तो वह इस प्रकार हो:

2.1. छन्द संख्या के आधार पर

छन्द संख्या के आधा पर मुक्तक काव्य पाँच प्रकार का होता है-

(क) मुक्तक: यदि एक पद्य दूसरे पद्य से निरपेक्ष हो तो वह मुक्तक काव्य कहलाता है।

(ख) युग्मक: यदि दो श्लोकों में वाक्यपूर्ति हो तो वह युग्मक काव्य कहलाता है।

(ग) सन्दानितक अथवा विशेषक: जहाँ तीन पद्यों में वाक्यपूर्ति हो रही हो तो वह सन्दानितक काव्य कहलाता है।

(घ) कलापक: जहाँ चार पद्यों से वाक्यपूर्ति हो रही हो तो वह कलापक काव्य कहलाता है।

(ड.) कुलक: पाँच से लेकर चैदह पद्यों के समूह तक को हेमचन्द्र तथा विश्वनाथ ने कुलक नाम दिया।

2.2. इतिवृत के आधार पर मुक्तक काव्य पाँच प्रकार का होता है:-

(क) शुद्ध: जिसमें बिना किसी अतिरिक्त सामग्री के किसी भावना का वर्णन होता है और जिसमें किसी इतिवृत का समन्वय भी नहीं रहता।

(ख) चित्र: इसमें शुद्ध मुक्तक में भावों के अनेक चित्र-विचित्र कल्पनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

(ग) क्योत्थ: अतीत में घटी किसी घटना का वर्णन करने वाला क्योत्थ कहलाता है।
(घ) संविधानकम्: जिसमें घटना की संभावना हो वह संविधानकम कहलाता है।
(ड.) आख्यानकवान्: इस घटना को कवि अपनी मनोरम प्रतिभा के सहारे बहुत ही विस्तृत करके दिखलाता है।

2.3. संग्रह के आधार पर

संग्रह के आधार पर मुक्तक काव्य तीन प्रकार का होता है। (क) कोश मुक्तक काव्य (ख) संघातमुक्तक काव्य (ग) संहिता मुक्तक काव्य। विश्वनाथ ने परस्परवेक्षी श्लोक समूह को कोश कहा है, जो व्रज्याक्रम से रचित होता है। संघात का उदाहरण 'मेघदूत' ही हो सकता है, क्योंकि उसके पद्य एककविकृत होते हुए भी परस्पर अनिबद्ध नहीं हैं। इसलिए विश्वनाथ उसे निबद्धकाव्य के एक भेद, खण्डकाव्य का उदाहरण माना है। बिखरे हुए वृतान्तों के श्लोक भी परस्परनपेक्ष नहीं होते, एक उपाख्यान का दूसरे उपाख्यान से सम्बद्ध नहीं हो सकता किन्तु एक ही उपाख्यान के आश्रित पद्य परस्पर सापेक्ष होते हैं। अतः विशुद्ध मुक्तक संग्रह कोश और संघात हैं संहिता वहीं, ये सभी भेद पद्यकुटुम्ब के सदस्य हैं।

उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त विद्वानों ने गहन चिन्तन-मनन करके मुक्तक काव्य के अन्य भेदों का भी निरूपण किया है। मुक्तक काव्य के स्वरूप को जानने के लिए इतने ही भेद पर्याप्त हैं, क्योंकि शेष सभी भेदों का इन्हीं में अन्तर्भाव हो जाता है।

संस्कृत साहित्य में मुक्तक काव्य

संस्कृत साहित्य में गीति काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। गीति की भावना भावातिरेक है। कवि अपनी रागात्मक अनुभूति तथा कल्पना से वर्ण्य-विषय को भावात्मक बना देता है। गीतियों का निर्माण उस बिन्दु पर होता है जब कवि का हृदय सुख-दुःख के तीव्र अनुभव से आप्लावित हो जाता है और वह अपनी रागात्मक अनुभूति को, अपनी हार्दिक भावना की पूर्णता के कारण बाह्य अभिव्यक्ति के रूप में परिणत करता है: मुक्तक और प्रबंधक।

मुक्तक अपने में पूर्ण होता है। चार चरण के एक छंद में कोई नीतित्व, धर्म कल्पना, व्यवहार उपदेशक, प्राकृतिक चित्र अथवा कोई हृदय प्रसंग आदि उपनिबद्ध होता है। यह कला प्राचीन प्राकृत तथा संस्कृत कवियों से आरम्भ हुई। धम्मपद, गाहासतसई, भर्तृहरि की त्रिशती आदि में मुक्तक का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत मुक्तक मुख्यतः तीन धाराओं में प्रवाहित हुए हैं। भर्तृहरि की शतकत्रयी उसका सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। नीतिपरक मुक्तकों में जीवन का गहरा अनुभव काव्यमयी भाषा में अभिव्यक्त हुआ है।

प्राचीन आचार्यों ने काव्य का प्रयोजन सद्यः के साथ ही यश, व्यवहार ज्ञान, शिवेतरक्षति, कान्तासम्मित उपदेश भी बताया है। इन मुक्तकों में जीवन का व्यवहार, ज्ञान कराने का प्रयोजन मुखर हो उठा है। बहुधा अन्योक्तियों के माध्यम से भी जीवन के सत्यों का काव्यमय उपस्थापन किया गया है।

शान्तिपरक मुक्तकों में जीवन की क्षणभंगुरता की बात बलपूर्वक उपस्थित की गई है। वैदिक संहिताओं के देव, स्तुतिपरक-सूक्त, धार्मिक तथा दार्शनिक विकास कें सन्दर्भ में नया स्वरूप ग्रहण कर स्तोत्र साहित्य के रूप् में उपस्थित हुए हैं। शान्तिपरक मुक्तकों में इन स्तोत्रों में प्रवाहित आस्था और श्रद्धा के साथ-साथ जगत की नश्वरता के प्रतिवादन का स्वर ऊँचा है।

शृंगारपरक मुक्तकों में शृंगारी जीवन के विविध चित्र उपस्थित किए गए हैं। भारतीय जीवन में धर्म और दर्शन का स्थान सदा ही महत्त्वपूर्ण रहा है। किन्तु जीवन के आनन्द की ओर से भी मुंह नहीं फेरा गया, इसका प्रमाण मुक्तक काव्य ही है। प्राकृत और संस्कृत के मुक्तकों में जिन उन्मुक्त यौन सम्बन्द्धों का उल्लेख है, इस जीवन के उपयोग की जो अदम्य लालसा है वह मुक्तक काव्य के महत्त्व को स्पष्ट कर देती है। सैंकड़ों कवियों ने जीवन के जिस मांगलिक स्वरूप की अभिव्यक्ति प्रदान की है, इससे उनका जागतिक जीवन के प्रति अनुराग सहज ही दृष्टिगोचर होता है।

हाल की सतसई, गोवर्धनाचार्य की आर्यासप्तपशती, अमरूकशतक, शृंगारशतक, वैराग्य आदि मुक्तक काव्य संस्कृत साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं। संस्कृत के मुक्तकों की जलवायु दूसरी थी, व्यक्तित्व दूसरा था, लेकिन ये सभी हाल के संकलन से व्यापक रूप से प्रभावित थे।

संकीर्ण होने के कारण मुक्तकों में गहरी व्यंजना है। सच पूछिए तो, ध्वनि सम्प्रदाय के महान् आचार्यों ने मुक्तकों का ध्वनि की स्थापना में बड़ा सहारा लिया है। चाहे प्रकृति का चित्रण हो, नीति के उपदेश हो, जीवन का अंकन हो, इन छोटे छन्दों की क्षमता का जवाब नहीं है। मुक्तक का एक श्लोक ही चमत्कार उत्पन्न करने में अपने आप सक्षम होता है।

मुक्तक काव्य का स्वरूप

मुक्तक रचना करने पर भी अपनी पुरानी परम्परा के मोहवश अथवा प्रबन्ध प्रवृति की तुष्टि के लिए एक ही भाव या विषय से सम्बद्ध मुक्तकों का एक संग्रह कर उनका नामकरण संख्या के आधार पर किया जाने लगा। इस संग्रह प्रवृति के आधार पर अनेक प्रकार के मुक्तक काव्यों की रचना हुई। पचास पद्यों वाले संग्रह को पंचाशिका, सौ पद्यों वाले को शतक, सात सौ पद्यों वाले को सप्तशती या सतसई कहा जाने लगा। डा॰ सुरेन्द्र नाथ गुप्त के अनुसार 'शतक' का अभिप्राय 'अनेक' से है। एस॰के॰ डे के अनुसार "शतक" से अभिप्राय एक ही कवि की रचना से है, जिसमें लगभग सौ विभिन्न पद्यों का संग्रह होता है। भर्तृहरि और अमरूक के शतकों का नामकरण भी इसी आधार पर आधारित है। भर्तृहरि के शतकत्रय पर प्राकृत गाथाओं का प्रभाव है। शृंगार पर गाथासप्तशती का, नीति पर वज्जालग्ग और वैराग्य पर थेरों का प्रभाव है।

या चिन्तयामि सततं ...

इस प्रकार की विडम्बना श्लोक गाथासप्तशती में इस प्रकार है:

सा तुण्झवल्लयातं सिमज्झवेसोसितो अ तुज्झ अहं
वालअबुडं भणामो पेग्मं फिरबहुति आरति।।

गाहासतसई

मुक्तकों का वास्तविक स्वरूप तो हमें सातवाहन द्वारा संकलित गाहासतसई में प्राप्त होता है। स्वयं हाल ने उल्लेख किया है कि उन्होंने कोटि गाथाओं में से सात सौ गाथाएँ चुनी हैं। ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में ये गाथाएँ मुक्तक लोक सम्मति थे।

सतसई में हमें लोक का जैसा चित्रण मिलता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं। इन गाथाओं में सामान्य जनता का जीवन, आचार, धर्म, और काम का वह स्वरूप दिखाई देता है, जिसे दूसरे माध्यम से प्रकट करना आसान नहीं है। गाथा का प्रकृति चित्रण भी अत्यन्त मनोहर है। यद्यपि सतसई की रचना संस्कृत में नहीं है परन्तु संस्कृत के मुक्तक गीति-काव्यों

की उपजीव्य रही है। कीथ के अनुसार इसकी रचना 200 ई॰ से 450 ई॰ सन् के बीच में हुई होगी। गाथासप्तशती के पद्य सुभाषित ग्रन्थों में खूब उद्धृत हुए हैं।

शतकत्रय

शतकों की परम्परा में हमें सर्वप्रथम भर्तृहरि के तीन शतक, नीति, वैराग्य और श्रृंगार शतक मिलते हैं। तीनों कृतियों ने भर्तृहरि को लोकप्रिय बना दिया है। इन्हीं शतकों के आधार पर भर्तृहरि के जीवन के बारे में कल्पना की जाती है कि वे प्रधान रस से भोगासक्त थे। साथ ही अनेक वर्णनों से यह भी प्रतीत होता है कि वे सांसारिक भोगों से ऊबकर कभी-कभी संन्यास ले लेते थे तथा कुछ समय बाद पुनः गृहस्थाश्रम की ओर लौट जाते थे।

भर्तृहरि उच्च कोटि के प्रतिभाशाली विचारक थे। तीनों शतक भौतिक जीवन के सूक्ष्म अनुभावों से मण्डित होने के कारण ही काव्यात्मक दृष्टि से भी श्रेष्ठ हैं। इनकी भाषा अत्यंत प्रांजल हैं। तथा प्रसाद व माधुर्य गुण से युक्त एवं मुहावरेदार है।

सूर्यशतक

इसके रचयिता मयूर कवि है। इस शतक का चतुर्थ संस्करण सन् 1954 में निर्णय सागर मुद्रणालय बम्बई से प्रकाशित हुआ। मयूरकवि बाणभट्ट के श्वसुर थे और उज्जयिनी के भोज राजा की सभा के रत्न थे। कीथ के अनुसार मयूर और बाण समकालीन थे। परम्परागत कथा है कि मयूर ने अपनी पुत्री के सौन्दर्य का इतना सूक्ष्म वर्णन किया है कि पुत्री ने क्रोधवश शाप दे दिया। फलस्वरूप् ये कोढी हो गए। इस दयनीय अवस्था से इनका छुटकारा भगवान् सूर्य की कृपा से हुआ। जिनकी स्तुति इन्होंने 'सूर्यशतक' में की है।

चण्डीशतक

सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महाकवि बाण द्वारा विरचित चण्डीशतक एक उत्तम धार्मिक रचना है। इसमें 102 पद्य हैं यह मुख्यतया सग्धरा छन्द है। शिव पत्नी भवानी के सम्मान में विशेषतः उनके द्वारा महिषासुर वध जैसे महान कार्य करने के निमित इसकी रचना की गई है। यह कविता प्रार्थना का काम भी देती है, क्योंकि उसमें भवानी से अपने भक्तों की रक्षा करने के निमित प्रार्थना की गई है। इनकी शैली गाढ़जन्य वाणी है।

अमरूकशतक

हाल और भर्तृहरि की समृद्ध परम्परा में अमरूक का शतक भी आता है। आनन्दवर्धन ने अमरूक को बड़े आदर के साथ याद किया है। इनके श्रृंगार-रस से ओत-प्रोत मुक्तकों को प्रबन्धायमान कहा है। कीथ का मत है कि वामन सन् 800 ई॰ के लगभग द्वारा अमरूक शतक के पद्यों को उद्धृत करने से इनका समय सन् 750 ई॰ के पहले का है। हस्तलिखित ग्रंथो में इसके पद्यों की संख्या 9,115 तक मिलती है। चार पाठों में केवल 15 पद ही एक समान हैं। इस ग्रंथ की अनेक टीकाएँ मिलती है। अमरूक शतक श्रृंगार का एक पादीय काव्य है। इसमें मान विप्रलम्भ की प्रधानता है। अमरूक ने अपने पद्यों में गागर में सागर भर दिया है। इसलिए उनकी प्रशंसा करते हुए आनन्दवर्धन ने एक-एक श्लोक को प्रबन्धशत कहा है। उनका एक-एक श्लोक गम्भीर अनुभूतियों से भरा है।

श्रृंगारशतक

इसके रचयित नरहरि है। यह काव्यमाला के द्वादश स्तवक में प्रकाशित है। नरहरि के समय का निर्णय नहीं हो सका है। किन्तु इन्होंने कालिदास, बाण और हर्ष की चर्चा की है, इसमें इतना निश्चित है कि ये हर्ष के बाद हुए। उक्त ग्रंथ

में कामिनी की कामलीला का चैपड़ के खेल के साथ सरस वर्णन है। सामन्त युग में चैपड़ का खेल निश्चिन्तता के साथ खेला जाता था।

शतश्लोकी

यह आठवीं शताब्दी के अन्तिम भाग की रचना हे और शंकराचार्य द्वारा विरचित है। इसमें स्रग्धरा छन्द में निबद्ध 101 पद्य हैं, जिनमें वेदान्त के सिद्धान्तों को कुछ अंशों तक कल्पना से समृद्ध शैली में प्रतिपादित किया है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

[1] अग्निपुराण, महर्षि वेदव्यास, बलदेव उपाध्याय, चैखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1966।
[2] अभिज्ञानशाकुन्तलम, कालिदास, पदमश्री डाॅ० कपिलदेव द्विवेदी, आचार्य (प्रणेता)।
[3] आर्यासप्तशती, गोवर्धनाचार्य, चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1965।
[4] उज्ज्वलनीलमणि, रूपगोस्वामी, महामहोपाध्याय पण्डित दुर्गा प्रसाद शर्मा (व्याख्या), चैखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 1985।
[5] काव्यमीमांसा, राजशेखर, डाॅ० रमाशंकर त्रिपाठी (संपा०), मोतीलाल बनारसी, दास, दिल्ली, 1973।
[6] काव्यादर्श, दण्डी, प्रो० योगेश्वरदत्त शर्मा (संपा०), नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली, 1999।
[7] काव्यानुशासन, हेमचन्द, महामहोपाध्याय पं० शिवदत्तव काशीनाथ पांडुरंगा परब (संपा०), मेहरचंद लछमनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1986।
[8] काव्यालंकार, भामह, प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा (संपा०), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, विक्रम संवत् 2019।
[9] काव्यालंकार, रुद्रट, श्री रामदेव शुक्ल (संपा०), चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
[10] काव्यालंकारसूत्रवृत्ति वामन, डाॅ० बेचन झा (संपा०), चैखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1971।
[11] छन्दःसूत्रम, संस्कृत भाष्यकार, गुरूकुल वृंदावन, स्नातक: श्रीमदाखिलानन्द शर्मा (शोध संस्थानान्तर्गत)।
[12] कविरत्नम्, आचार्य धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, प्राच्य-विद्यापीठ, तरूण एन्कलेव, नई दिल्ली।